**एक खेल**

# बूढ़ी माँ, बूढ़ी माँ कई ढूँढे!

**इस खेल के लिए ज़मीन पर गोला बनाना पड़ेगा। गोले के एक तरफ उससे दस फुट दूर एक लाइन खींच लो। गोले के दूसरी तरफ भी अन्दाज़न बीस फुट दूर एक और लाइन खींच लो। (चित्र देखो)**

चलो, खेल शुरू करते हैं:
तुम्हारे दोस्तों में से किसी एक को बूढ़ी माँ बनना पड़ेगा। बूढ़ी माँ कौन बनेगा इसका चुनाव करने के तो कई तरीके तुम्हें मालूम ही हैं। जैसे,
अक्कड़-बक्कड़...हरा समन्दर गोपीचन्दर!

बूढ़ी माँ बना बच्चा गोले में कुछ ढूँढने का अभिनय करेगा। बाकी सब बच्चे गोले के पास वाली लाइन पर खड़े रहेंगे। वहाँ से वे बूढ़ी माँ से गाकर पूछेंगे:

बच्चे: बूढ़ी माँ, बूढ़ी माँ कई (क्या) ढूँढे?

बूढ़ी माँ: सुई धागा!

बच्चे: सुई धागे का क्या करोगी?

बूढ़ी माँ: थैली सिऊँगी।

बच्चे: थैली का क्या करोगी?

बूढ़ी माँ: पैसे रखूँगी।

बच्चे: पैसे का क्या करोगी?

बूढ़ी माँ: भैंस खरीदूँगी।

बच्चे: भैंस का क्या करोगी?

बूढ़ी माँ: दूध निकालूँगी।

बच्चे: दूध नहीं दिया तो?

इस के बाद बूढ़ी माँ बच्चों को मारने के लिए गोले से बाहर लाइन की तरफ दौड़ेगी। और बच्चे दूसरी लकीर की तरफ दौड़ेंगे। बूढ़ी माँ जिस बच्चे को दूसरी लाइन तक पहुँचने से पहले पकड़ लेगी वह आऊट हो जाएगा। अगली बार उसी को बूढ़ी माँ बनना पड़ेगा।

यह खेल इसलिए और मज़ेदार है कि इसमें हरेक को कुछ न कुछ अभिनय करने का मौका मिलता है। तो यह एक खेल-नाटक ही हुआ। हैना!